B-2

L-6

दिनांक

31-10-23

⇒ पानीपत तृतीय का परिणाम :-

- पानीपत तृतीय युद्ध के परिणाम के बारे में कहा जाता है कि इस युद्ध ने यह तो तय नहीं किया कि भारत पर शासन कौन करेगा पर यह निश्चित कर दिया कि शासन कौन नहीं करेगा।

- वस्तुतः इस युद्ध के परिणामों को लेकर इतिहासकारों के दो अतिवादी वर्ग उभरते हैं जिसमें एक वर्ग का मानना है कि इस युद्ध के बाद मराठा शक्ति पूर्णतः नष्ट हो गयी तो इतिहासकारों का दूसरा वर्ग इसका मराठों पर कोई विशेष प्रभाव नहीं मानता।

पानीपत तृतीय युद्ध में मराठों को भारी जानमाल की क्षति हुई और कहा गया कि शायद ही कोई ऐसा मराठा परिवार नहीं था जिसने अपना सदस्य न खोया हो और इस युद्ध के परिणाम ने मराठा मनोबल को इस कदर कमजोर किया कि भारत पर शासन की उनकी आकांक्षा मिटने लगी अर्थात जो मराठे हिन्दुस्तान का साम्राज्य पाने के सबसे करीब थे वे सब पीछे छूटने लगे

किन्तु यह भी सत्य है कि पानीपत के गंभीर आघात के बावजूद शीघ्र ही मराठा शक्ति माधव राव प्रथम

के नेतृत्व में उठ खड़ी हुई और यहां तक की हैदर जैसे सेनापति से भी चौथ वसूली की और पुनः अपनी क्षेत्रीय सीमाओं को लांघकर भारत के विस्तृत राजनैतिक परिदृश्य को प्रभावित करने लगे।

अतः पानीपत तृतीय के बाद मराठा शक्ति का आकलन इन दोनों विरोधाभाषी विचारों के मध्य में छिपा था अर्थात ना तो मराठा शक्ति सदा के लिए समाप्त मानी जानी चाहिए और ना ही यह स्वीकारा जा सकता है कि इस युद्ध का मराठा शक्ति पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा क्योंकि मुगलों के उत्तराधिकारी कहे जाने वाले मराठे अब इस स्थिति में नहीं रहे कि वे भारत का साम्राज्य संचालित कर सकें। वस्तुतः इस युद्ध में मराठा दैत्य मरा तो नहीं किन्तु जब जागा तो उसके सामने अंग्रेजों जैसी साम्राज्यवादी ताकत खड़ी थी इसी सन्दर्भ में कहा जाता है कि पानीपत तृतीय युद्ध भले ही अफगानों व मराठों के मध्य हुआ हो किन्तु वास्तविक विजय अंग्रेजों की हुई।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

महत्वपूर्ण युद्ध पानीपत में ही क्यों ?

- पानीपत की भू-सामरिक स्थिति युद्ध के अनुकूल थी चुंकि भारत पर अधिकांश आक्रमण उत्तर पश्चिम की ओर से हुये जहां सामान्यतः पहाड़ी और दुर्गम भौगोलिक क्षेत्र है अतः दिल्ली / आगरा पर आक्रमण करते समय पानीपत ही वह क्षेत्र था जहाँ युद्ध के लिये विस्तृत समतल मैदान उपस्थित था।

- भारतीय शासकों में राजनैतिक सफलता व दूरदर्शिता की कमी थी एक वैज्ञानिक सीमा पर ही आक्रान्ताओं को रोका जाये, पानीपत में युद्ध करना विवशता बन जाती थी क्योंकि यदि वे राजधानी में प्रवेश कर जाते तो इसका अर्थ था भारी जानमाल की क्षति।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

- पानीपत एक उर्वरक क्षेत्र था अतः बड़ी संख्या में सैनिकों व घोड़ों की खाद्य संबाधित आवश्यकता को पूरा करने में सक्षम था। उल्लेखनीय है कि उस समय के युद्ध महीनों चलते थे और हजारों की संख्या में सेनायें शिविर बनाकर युद्ध की प्रतीक्षा करती थीं।

- पानीपत तृतीय से एक विशेष सन्दर्भ यह भी जुड़ा था कि शेरशाह सूरी द्वारा उत्तर-पश्चिम से दिल्ली की ओर मार्ग बनाये जाने के कारण बड़ी संख्या में सेना और सैन्य सामग्री को लाना आसान हो गया।

आंग्ल मराठा युद्ध

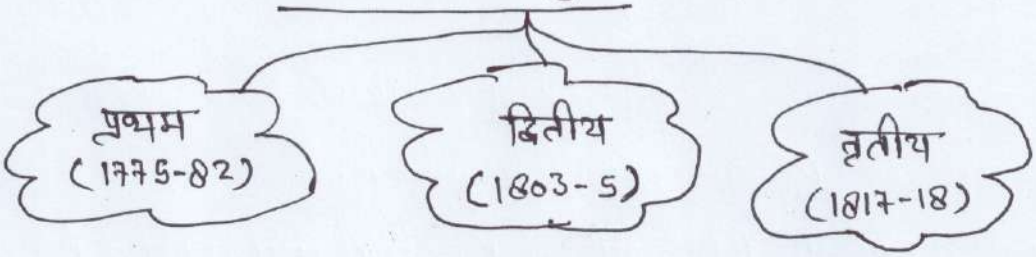

- प्रथम युद्ध (1775-82) -

जब रघुनाथ राव के पेशवा के दावे को बारभाई परिषद ने ठुकरा दिया तो वह मदद के लिए अंग्रेजों के पास चला गया और 1775 की सूरत की संधि की।

- अंग्रेज तो ऐसे ही किसी अवसर की तलाश में थे उनका मानना था कि पानीपत तृतीय व माधवराव की मृत्यु के बाद मराठे कमजोर हो चुके हैं और रघुनाथ राव के साथ मिलकर फूट डालो और राज करो की नीति उन्हें शीघ्र ही जीत दिला देगी

- 1775 से 82 तक चले इस युद्ध में मराठों का पलड़ा भारी रहा और अन्ततः 1782 में सलबाई की संधि से युद्ध विराम हुआ।

- द्वितीय युद्ध (1803-05) -

- बाजीराव द्वितीय एक अदूरदर्शी पेशवा साबित हुआ उसने अपनी महत्ता स्थापित करने के लिए होल्कर व सिंधिया के बीच प्रतिद्वंदिता को बढ़ावा दिया और इसी क्रम में जब होल्कर ने पेशवा व सिंधिया की संयुक्त सेना को हरा

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

दिया तो बाजीराव द्वितीय ने अंग्रेजों के साथ बसीन की संधि (1802) कर ली।

- यह संधि भोसले, सिंधिया व होल्कर जैसे सरदारों को उचित नहीं लगी अतः इसके विरोध में उन्होंने अंग्रेजों से युद्ध करने की ठानी किन्तु पराजित होकर इन तीनों शक्तियों को भी अंग्रेजों के साथ सहायक संधि स्वीकारनी पड़ी

तृतीय युद्ध (1817-18)

लॉर्ड हेस्टिंग्स ब्रिटिश साम्राज्य विस्तार हेतु उत्साहित था और किसी भी तरह मराठा क्षेत्र को ब्रिटिश साम्राज्य का हिस्सा बना देना चाहता था अतः उसने पिण्डारियों के सफाये के बहाने तीसरे आंग्ल-मराठा युद्ध की नींव रख दी।

- वस्तुतः पिण्डारी परंपरागत रूप से मराठों के अनियमित सैनिक जैसे होते थे जो युद्ध के बाद उस क्षेत्र में लूट पाट करते थे। किन्तु 19 वीं सदी आते-आते पिण्डारियों का मराठों से बेहतर संबंध नहीं रह गया था अर्थात हेस्टिंग्स ने केवल युद्ध के बहाने के रूप में पिण्डारी व मराठा संबंध को उत्तरदायी कारक बताया।

- इस युद्ध में मराठों को शिकस्त देकर सतारा के छोटे से क्षेत्र में छत्रपति को गद्दी सौंपकर विस्तृत मराठा क्षेत्र को अंग्रेजों ने ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Platform
KHAN SIR

सहायक संधि

- ब्रिटिश साम्राज्य के विस्तार व सुदृढीकरण में सहायक संधि की भूमिका विशिष्ट मानी जाती है लॉर्ड वेलेजली के इस कथन से संधि का उद्देश्य अपने आप/ स्वतः स्पष्ट हो जाता है "मेरा उद्देश्य भारत में ब्रिटिश सत्ता की सर्वोच्चता स्थापित करना और फ्रांसीसियों के प्रभाव को समाप्त करना है।"

- सामान्य अर्थ में दो या दो से अधिक शक्तियों के मध्य सुरक्षा के लिए किया गया समझौता सहायक संधि कहलाता है किन्तु अंग्रेजों ने इसे श्रेष्ठ शक्ति के द्वारा अपने लाभ के लिए किसी दूसरी राजनीतिक शक्ति पर शर्तें थोपकर उसे अधीनस्थ बनाने के रूप में इसका उपयोग किया।

- भारत में सर्वप्रथम डुप्ले ने इसकी शुरुआत की किन्तु इसे व्यवस्थित रूप देने का श्रेय लॉर्ड वेलेजली को ही दिया जाता है।

शर्तें/ प्रावधान

- भारतीय रियासतें ब्रिटिश सत्ता की सर्वोच्चता स्वीकार कर अपने विदेशी संबंधों का निर्धारण/ दायित्व अंग्रेजों को सौंप देगी यद्यपि आंतरिक मामलों में रियासतों के निर्णय का अधिकार बना रहेगा।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
KHAN SIR

- एक ब्रिटिश अधिकारी रेजीडेंट के रूप में रियासत की राजधानी में रहेगा और वहां एक ब्रिटिश सहायक सेना भी नियुक्त की जायेगी जिसका खर्च रियासतों को ही वहन करना पड़ेगा।

अंग्रेजों ने इसके बदले में बड़ी रियासतों से संप्रभु क्षेत्र हासिल किये और छोटी रियासतों से सहायक सेना के लिए धन लिया।

- अंग्रेजों ने रियासतों की सुरक्षा का दायित्व अपने ऊपर ले लिया।

प्रभाव

- सहायक संधि अंग्रेजों की उस कूटनीतिज्ञता की परिचायक थी जिसने बड़ी चालाकी से न सिर्फ रियासतों को अपने उपर निर्भर बना लिया बल्कि बड़ी रियासतों से सम्प्रभु क्षेत्र हासिल कर एक तरह से अपना साम्राज्य विस्तार भी करते रहे।

- यदि दीर्घकालिक नजरिये से देखा जाये तो भारत में ब्रिटिश साम्राज्य विस्तार की एक तार्किक व सुनियोजित रणनीति दिखती है जो वारेन हेस्टिंग्स की घेरे की नीति से वेलेजली की सहायक संधि और अंततः डलहौजी की हड़प नीति में रूपांतरित होती है। भारत में फ्रांसीसी भय को समाप्त कराने में इसने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई क्योंकि

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

विदेशी संबधों का निर्धारण अंग्रेजों के हाथों में आ जाने से अब बिना उनकी इजाजत के किसी अन्य यूरोपीय शक्ति को कोई रियासत अपनी सेना में शामिल नहीं कर सकती थी और इस तरह जब यूरोप में नेपोलियन की / फ्रांस की सैन्य पताका लहरा रही थी तो सहायक संधि ने भारत मे अंग्रेजों को सर्वोच्च ताकत बना दिया। सर्वप्रथम सहायक संधि से पहले अंग्रेजों की भारत में उपस्थिति विभिन्न शक्तियों में से एक थी किन्तु अब वे सर्वोच्च शक्ति बन गये।

- अंग्रेजों को अपनी सुरक्षा का दायित्व सौंपकर रियासतें वास्तव में सामरिक रूप से खोखली होती गयी क्योंकि अब सैनिकों की नियुक्ति प्रशिक्षण तथा सैन्य संचालन आदि की चिंता छोड़ दी गयी और इस तरह सहायक संधि ने रियासतों का विसैन्यीकरण व निःशस्त्रीकरण कर दिया और देशी शासकों को इस बात का एहसास भी ना हुआ इसके साथ ही अंग्रेजों ने रियासतों के खर्च पर ही अपनी सेना की संख्या को बढ़ाकर भारत में अपने आप को मजबूत किया।

- राजनैतिक लाभ के साथ ही सहायक संधि ने आर्थिक व सांस्कृतिक श्रेष्ठता भी स्थापित करने में मदद की क्योंकि रियासतों के अभिजात्य वर्गीय लोग ब्रिटिश वेश-भूषा, खान-पान व जीवन शैली को अपनाने लगे जिससे एक तरफ तो इन रियासतों में ब्रिटिश सामग्री की मांग बढ़ती गयी तो दूसरी तरफ अंग्रेजों की सांस्कृतिक श्रेष्ठता भी स्थापित होती गयी।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
KHAN SIR

- "कार्ल मार्क्स ने कहा कि भारतीय रियासतों ने तो अपनी स्वतंत्रता उसी दिन खो दी थी जब उन्होंने सहायक संधि पर हस्ताक्षर किये थे।"

- सहायक संधि उस दीमक की तरह थी जिसने रियासतों को अन्दर से खोखला कर दिया और शासक अभी भी अपने आप को सम्प्रभु समझते रहे।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR